

सवाई माधोपुर जिले में जल संसाधन की समस्याएं एवं समाधान



राजीव कुमार मीना
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

जल संसाधन पानी के वे स्रोत हैं जो मानव के लिए उपयोगी हो या जिनके उपयोग की सम्भावना हो। पानी के उपयोग में कृषि, औद्योगिक, घरेलू, मनोरंजन हेतु और पर्यावरणीय गतिविधियों में उपयोग शामिल है। जल एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जिस पर केवल मानव ही नहीं अपितु वनस्पति व सम्पूर्ण जीव जगत निर्भर है। राजस्थान जैसे राज्य के लिए जल का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि इसका आधे से अधिक भाग शुष्क व अर्धशुष्क है, जहाँ वार्षिक वर्षा का औसत 25 से.मी. से कम है। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा वर्षा की कमी से प्रदेश में जल संकट के हालात सामने आ रहे हैं व भूजल की अंधाधुन्ध निकासी तथा वर्षा जल से भूजल पुनर्भरण में गिरावट के परिणामस्वरूप प्रदेश का भूजल सतर तेजी से गिरने से गहराई में भूजल खारा हो गया है व कई गाँवों में फ्लोराइड की मात्रा बढ़ती जा रही है जो की 6 पीपीएम से अधिक है। वर्ष 2001 में भूजल की मात्रा 1783 मिलियन घनमीटर थी जो अब घटकर 1497 मिलियन घनमीटर हो गई है। भूजल के उपयोग में वृद्धि के फलस्वरूप 1995 में औसत 12.17 मीटर गहराई पर मौजूद पानी की स्थिति 20 मीटर से ज्यादा गहरी हो गई है। जिले की खंडार पंचायत समिति संवेदनशील श्रेणी में है, बाकि अन्य पंचायत समिति बामनवास, बॉली, गंगापुर सिटी और सवाई माधोपुर अतिदोहित श्रेणी में है। प्रस्तुत पेपर में मैंने यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया है, जिसके माध्यम से जिले की जल संसाधन की स्थिति, समस्याओं व निदान के उपाय प्रस्तुत किये हैं। गिरते भूजल स्तर के समाधान के लिए वर्षा जल संग्रहण, फव्वारा व बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति, उद्योगों में जल का पुनः उपयोग हेतु रिसायकलिंग करना व कृत्रिम भूजल पुनर्भरण बनवाना आदि द्वारा संभव है।

मुख्य शब्द : भूजल संसाधन, सिंचाई, औसत वर्षा।

प्रस्तावना

जल संसाधन देश की महत्वपूर्ण संपदाओं में एक प्रमुख घटक है। देश के सतही जल एवं भू-जल संसाधन कृषि, जल विद्युत उत्पादन, पशुधन उत्पादन, औद्योगिक गतिविधियों, वन मत्स्यपालन, नौकायन, मनोरंजन गतिविधियों में मुख्य भूमिका निभाते हैं। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि एवं रहन सहन के स्तर में तीव्र सुधार के कारण हमारे जल संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है तथा प्रतिव्यक्ति जल संसाधनों की उपलब्धता में दिन प्रतिदिन कमी आ रही है। अवक्षेपण में स्थानिक एवं कालिक परिवर्तनशीलता के कारण देश बाढ़ एवं सूखे की समस्या से ग्रसित हो गया है एवं भूजल के अत्यधिक दोहन के कारण नदियों के प्रवाह में कमी, भूजल संसाधनों के स्तर में कमी एवं तटीय क्षेत्रों के जलभृतों में लवण जल का अवांछित प्रवेश हो रहा है। कुछ अपवाह क्षेत्रों में नहरों से अत्यधिक सिंचाई के परिणामस्वरूप जल-मग्नता एवं लवणता की समस्या पैदा हो चुकी हैं। बिन्दु एवं अबिन्दु स्रोतों से प्रदूषकों के भार में वृद्धि के कारण सतही जल एवं भू-जल संसाधनों की गुणवत्ता में कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण अवक्षेपण एवं जल उपलब्धता प्रभावित होने की संभावना वर्तन है। घरेलू कृषि एवं उद्योग इनमें अलग-अलग जल की मांग होती है।

जल संरक्षण की तकनीकों को बताते हुए कहा है कि वर्षा जल का संग्रहण करना चाहिए तथा शुष्क मौसम में उसका उपभोग करना चाहिए (रेके और क्यूलिस, 1986)।

राजस्थान में भूमि व सूर्य का प्रकाश प्रचुर मात्रा में है, परन्तु जल संसाधन अल्प मात्रा में है। अधिकांश नदियाँ मौसमी हैं, जो की वर्षा जल पर निर्भर हैं। प्रत्येक मानसून में राज्य के विभिन्न भागों में एक ही समय पर अकाल व बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। सतही जल की कमी के कारण

राजस्थान को बहुत हद तक भूजल संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता है। बड़ी संख्या में कुएं, बावड़िया और झालरे प्रमुख परंपरागत जल साधन हैं। राज्य में भू-जल की स्थिति भू-आकारिकीय संरचना तथा भूमिगत जल धारक संरचनाओं की प्रकृति पर निर्भर करती है। भूजल विकास राजस्थान के पश्चिमी भागों की अपेक्षा पूर्वी भागों में अधिक है। अनिश्चित वर्षा, सतही जल संसाधनों की अनुपस्थिति तथा उच्च वाष्पात्सर्जन इसके कारण है।

डेनिस एवं मीडोज (कमददपे – उकमेए 1972) के नेतृत्व में गठित एक शोध दल के प्रतिवेदन में 'वृद्धि की सीमायें' (स्पउपजमे जव ळतवृजी) से माना जाता है। इसका प्रकाशन 1972 में हुआ, इसमें जल सहित संसाधनों के अवनयन को रोककर जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाकर स्वस्थ पर्यावरण को जन्म देने पर बल दिया गया था।

जल संसाधन की उपलब्धता में सवाई माधोपुर जिला अतिदोहित (डार्क) श्रेणी में वर्गीकृत है। हमारे पुरखों द्वारा सदियों से बूंद बूंद पानी जमा कर भू-जल इकट्ठा किया। वर्ष 2001 में भूजल की मात्रा सवाई माधोपुर जिले में 1783 मिलियन घनमीटर थी, जो अब घटकर 1497 मिलियन घनमीटर रह गई है। भूजल अतिदोहन के कारण पानी की गंभीर समस्या बन गई है। जनसंख्या वृद्धि व अन्य प्रकार की जल आवश्यकताओं में वृद्धि से सवाई माधोपुर जिला अत्यधिक संकट की ओर अग्रसर हो रहा है। घटते जल संसाधन के कारण प्रतिव्यक्ति जल की उपलब्धता में भी कमी आई है। इसका मूल कारण बढ़ती जनसंख्या तथा जल की मात्रा का गुणात्मक एवं मात्रात्मक ह्रास है। वर्तमान शोध इन्ही चुनौतियों का चित्रण, जल संसाधन पर वर्षा की परिवर्तनीयता का प्रभाव एवं जल संरक्षण के समाधान पर किया गया है। क्षेत्र में सुव्यवस्थित जलापूर्ति किस तरह उपलब्ध करवायी जाये पर भी विशेष बल दिया गया है। जल संरक्षण के लिए जल का सीमित व उचित उपयोग, खेती में फव्वारा विधि या बूंद बूंद विधि का प्रयोग, कृत्रिम जल पुनर्भरण, परंपरागत जल संरक्षण, कुएं, बावड़िया, तालाब बनाए जाए व उद्योगों में जल का रिसाकलिंग द्वारा पुनर्उपयोग किया जाए।

सतत जल की उपलब्धता तथा वनस्पति क्षेत्र में वृद्धि का मुख्य कारण जल प्रबन्धन को बताया गया है इसमें जल प्रबन्धन के सतही एवं भूमिगत जल स्तर में वृद्धि सम्भव हो पाई है (सिंह, 1996)

साहित्यावलोकन

संसाधन मानव विकास का पर्याय बन चुका है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ संसाधनों में भी विकास हुआ है। मनुष्य संसाधन जुटाने में नई तकनीकों का उपयोग करने लगे हैं। भौगोलिक स्थालाकृति एवं वातावरण, संसाधन की मात्रा एवं गुणवत्ता को नियन्त्रित करती रही है। परन्तु वर्तमान परिपेक्ष्य में संसाधन की मात्रा एवं गुणवत्ता मानवीय उपयोग पर आधारित है। परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर संसाधन हमारी दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं वहीं दूसरी ओर इनके दुरुपयोग एवं अव्यवस्थित उपयोग से हमारी जीवन की गुणवत्ता पर बुरा असर पड़ा है।

प्रस्तुत शोध में साहित्यावलोकन जल संसाधन

की मात्रात्मक एवं गुणात्मक स्थिति के कारण नगरीय एवं उससे लगे ग्रामीण क्षेत्र में निवास कर रहे लोगों की जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन करना है। वहीं दूसरी ओर बढ़ती जनसंख्या द्वारा जल संसाधन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक भाग का अध्ययन करना भी निहित है।

उसीउल्ला एवं अन्य (Wasiullha & et.al, 1971) ने जल संरक्षण की तकनीकों पर बल देते हुए जल को संग्रहित करने पर जोर दिया है, व्यर्थ बहते जल को रोककर जल संभावित में वृद्धि की जा सकती है तथा सतत आर्थिक विकास संभव हो सकता है।

बाली (Bali, 1981) ने बताया कि जल के उचित प्रबन्धन के लिए आवश्यक है कि ऐसे कार्यक्रमों का विकास किया जाये जिससे जल की निरन्तर आपूर्ति होती रहे तथा सिंचाई, पेयजल तथा उद्योगों के लिए जल की कमी महसूस न हो।

शर्मा (Sharma, 1985) ने बताया कि जल की कमी वाले क्षेत्रों में जल का नियोजन तथा उचित प्रबन्धन करना चाहिए जिसमें शुष्क मौसम में भी जल की आपूर्ति होती रहे इससे लोगों को निरन्तर रोजगार की प्राप्ति होगी तथा आर्थिक विकास के स्तर में भी बढ़ोतरी होगी।

कुमार एवं पांडे (Kumar & pandey, 1989) ने बताया कि भारत में वर्षा के जल को संग्रहण करने की उचित एवं वैज्ञानिक विधि नहीं है। जिससे काफी जल व्यर्थ में ही बह जाता है। जिससे जल का पुनर्भरण नहीं हो पाता है।

मोहिल (Mohil, 2000) ने जल प्रबन्धन पर जोर देते हुए कहा है कि जल, मृदा तथा वनस्पति का संरक्षण कृषि विकास को निर्धारित करता है। अगर किसी भी क्षेत्र में जल की निरन्तर उपलब्धता है तो कृषि विकास को बल मिलता है।

टाइडमैन (Tideman, 2000) ने भारतीय दशाओं में जल संभर प्रबन्धन के विकास के बारे में बताया है। मृदा तथा जल का मानव के विकास के लिए अति महत्व है इसकी निरन्तर आपूर्ति ही किसी भी क्षेत्र के विकास को निर्धारित करती है।

नाग (Nag, 2002) ने जल प्रबन्धन का मानचित्र तैयार किया जिसमें उन्होंने गंगा के मैदान व ब्रह्मपुत्र नदी डेल्टा से संबन्धित क्षेत्रों को दर्शाया तथा बताया गया कि सूखे क्षेत्रों को उपयुक्त रणनीति द्वारा जल संभर आदि अपनाकर नियोजित किया जा सकता है।

डी पुरुषोत्तम (Purushotam & et. Al, 2011) के वर्तमान अध्ययन 'पर्यावरण के प्रभाव के कारण भू-जल में गिरावट तथा गुणवत्ता में कमी' में इस बात का उल्लेख किया है कि महेश्वर जल संभर, आन्ध्रप्रदेश में भू-जल स्तर के गिरावट का मुख्य कारण भू-जल का दोहन, वैज्ञानिक तकनीक का अभाव तथा अव्यवस्थित प्रबन्धन रहा है।

अध्ययन क्षेत्र

सवाई माधोपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में 25°44'59" से 26°45'00" उत्तरी अक्षांश व 75°59'00" से 76°58'50" पूर्वी देशांतर के बीच अवस्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 5020 वर्ग कि.मी. है। प्रशासनिक दृष्टि से सवाई माधोपुर जिले को सात

सारणी जिला सवाई माधोपुर		
पंचायत समिति	कुल ग्राम पंचायत	चयनित ग्राम पंचायत
गंगापुर	39	6
बामनवास	36	6
बौली	41	6
सवाई माधोपुर	47	7
खंडार	37	6
कुल	198	31

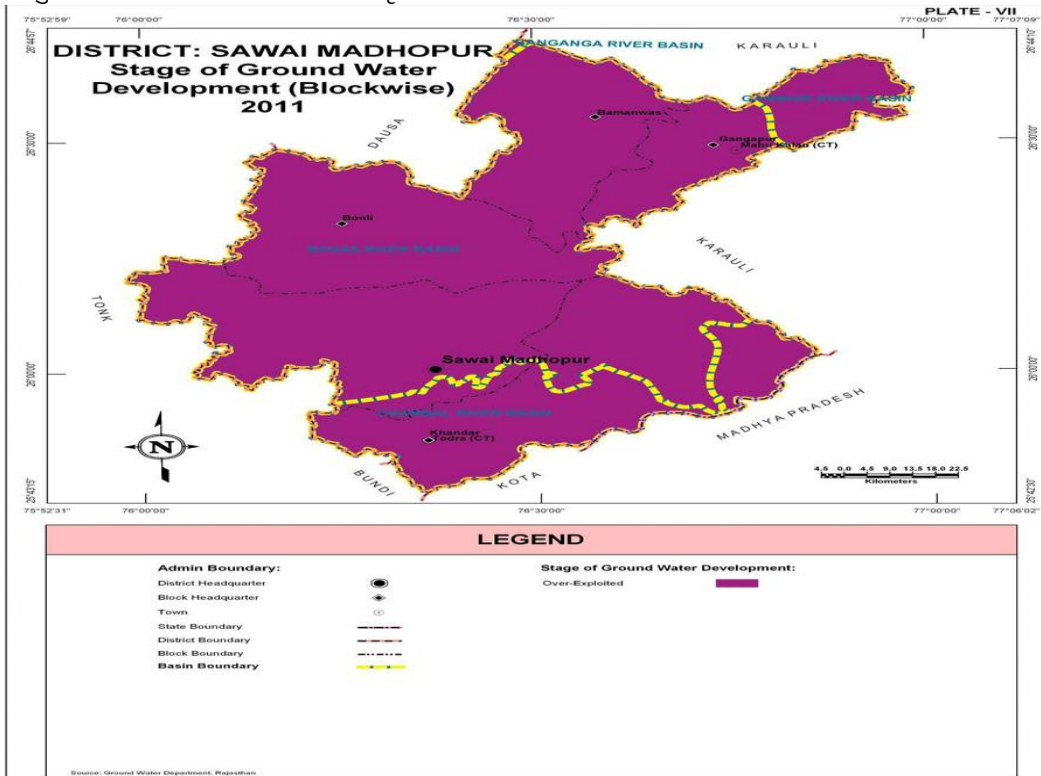
परिचर्चा एवं समस्या समाधान

जल प्रकृति की अमूल्य देन है व जीव मात्र का अस्तित्व इसी पर टिका है। समय के बदलाव के साथ जल का अत्यधिक दोहन होना तथा वर्षा की कमी से प्रदेश में जल संकट के हालात सामने आ रहे हैं। सवाई माधोपुर जिला अतिदोहित श्रेणी में वर्गीकृत है। अतिदोहित

(डार्क) श्रेणी, क्षेत्र में उपलब्ध होने वाले भूजल का 100 प्रतिशत से अधिक दोहन किया जाये यानी वर्षा जल से पुनर्भरित भूजल के अलावा पूर्वजो द्वारा अनंत वर्षों से संचित किये भूजल में से ही भूजल का दोहन किया जाये तो क्षेत्र अतिदोहित श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है। जिले में वर्ष 1995 में भूजल दोहन 41 प्रतिशत होता था जो वर्तमान में बढ़कर 135 प्रतिशत हो गया है अर्थात कुल वार्षिक पुनर्भरण की तुलना में 16 मिलियन घनमीटर भूजल अधिक निकाला जा रहा है।

भूजल विकास स्तर— 2011

सवाई माधोपुर जिले की सभी पंचायत समिति अतिदोहित श्रेणी में आती है, जिसे निम्न मानचित्र द्वारा दर्शाया गया है।



Source : Hydrogeological Atlas of Rajasthan. Sawai Madhopur district. Ground Water Department, Rajasthan.

सवाई माधोपुर जिले में सामान्य वार्षिक वर्षा 697 मिलीमीटर होती है। रेतीले क्षेत्रों में वार्षिक वर्षा का लगभग 12 प्रतिशत एवं चट्टानी क्षेत्रों में 7 प्रतिशत जल ही भूमि में जाता है। जिससे लगभग 346 मिलियन घनमीटर भूजल जमा होता है लेकिन इसके विरुद्ध 446 मिलियन घनमीटर भूजल का दोहन कर रहे हैं। जिले की सभी पेयजल योजनाएँ एवं सिंचाई कार्य भूजल पर आधारित ह सबसे अधिक पानी लगभग 92 प्रतिशत कृषि में, 7 प्रतिशत पेयजल में तथा अन्य गतिविधियों में खर्च होता है।

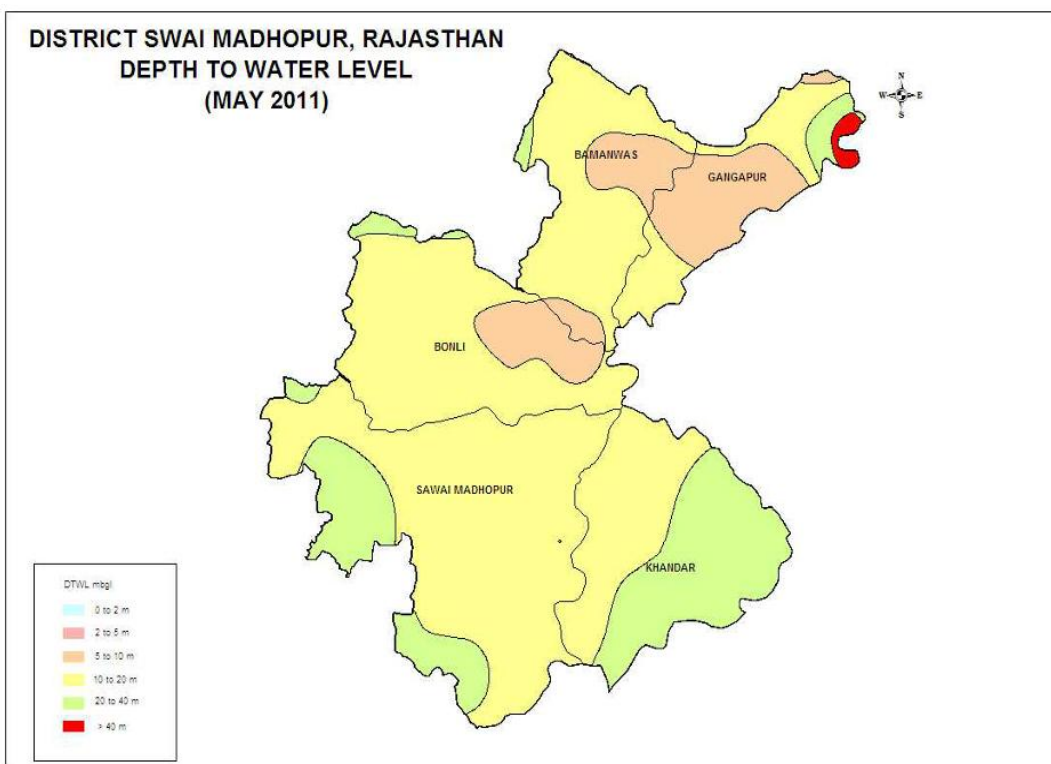
जल स्तर परिदृश्य —2011

केन्द्रीय भू जल बोर्ड समय-समय पर राष्ट्रीय हाइड्रोग्राफ नेटवर्क स्टेशन (NHNS), की वर्ष में चार बार

जनवरी, मई (प्री-मानसून), अगस्त एवं नवम्बर (मानसून बाद) निगरानी करता है। जिले में हाइड्रोग्राफ स्टेशन की कुल संख्या 17 है जिसमें 15 खुदाई के कुएं और 2 पाइजोमीटर (दबाव मापने के यंत्र) शामिल हैं।

जल स्तर की गहराई —(प्री-मानसून, मई-2011)

पूर्व मानसून, 2011 में पानी की गहराई 6.1 से 48.76 मीटर तक बड़ी। खण्डार के द.पू.भाग में, सवाई माधोपुर के द.प. भाग में, बौली, बामनवास व गंगापुर के बहुत छोटे हिस्से में 20 मीटर से अधिक गहरे पानी का स्तर रिकॉर्ड किया है। जिले के प्रमुख हिस्से में 10 से 20 मीटर के बीच अवलोकित किया।

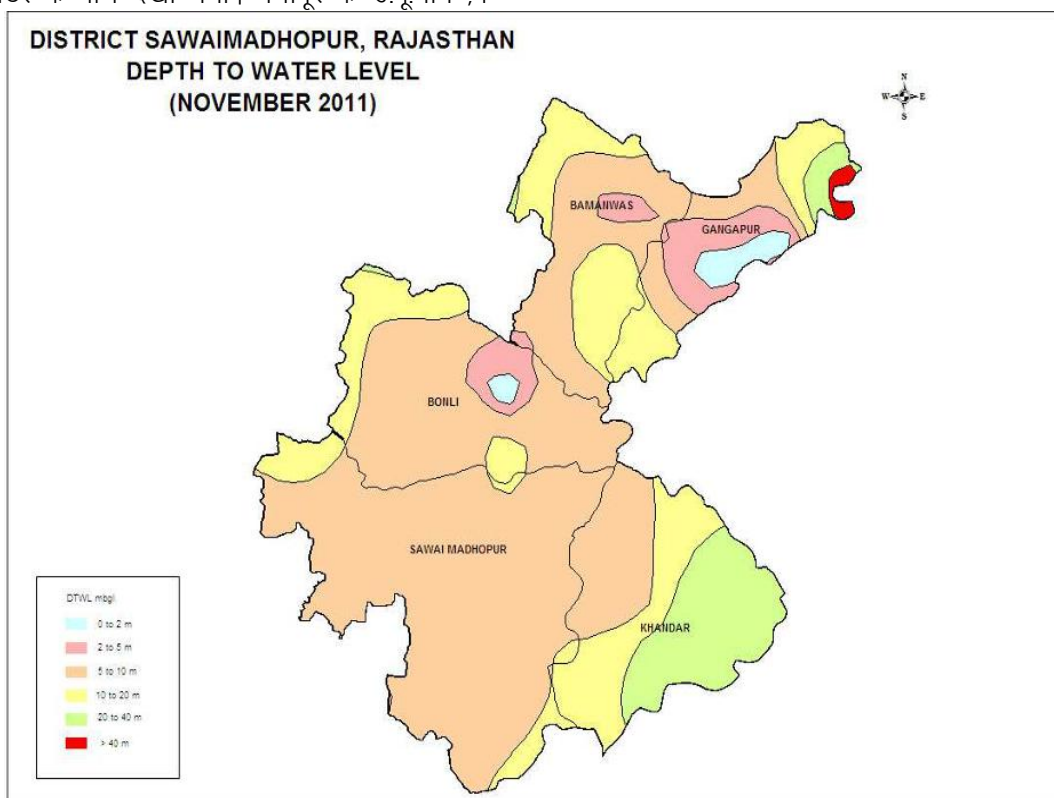


Source : Ground Water Brochure Sawai Madhopur District (2011). Central Ground Water Board, Govt. of India.

जल स्तर की गहराई—(मानसून बाद, नवम्बर—2011)

मानसून बाद पानी की गहराई 0.31 से 48.85 मीटर तक हो गई। जिले के प्रमुख हिस्से में जल स्तर 5 से 20 मीटर के बीच देखा गया। गंगापूर के उ.पू.भाग ,व

खण्डार का द.पू.भाग में 20 मीटर से ज्यादा जल स्तर रिकॉर्ड किया गया। बोली, बामनवास व गंगापूर के उथले भागों में जल स्तर 5 मीटर से अवलोकित किया गया।



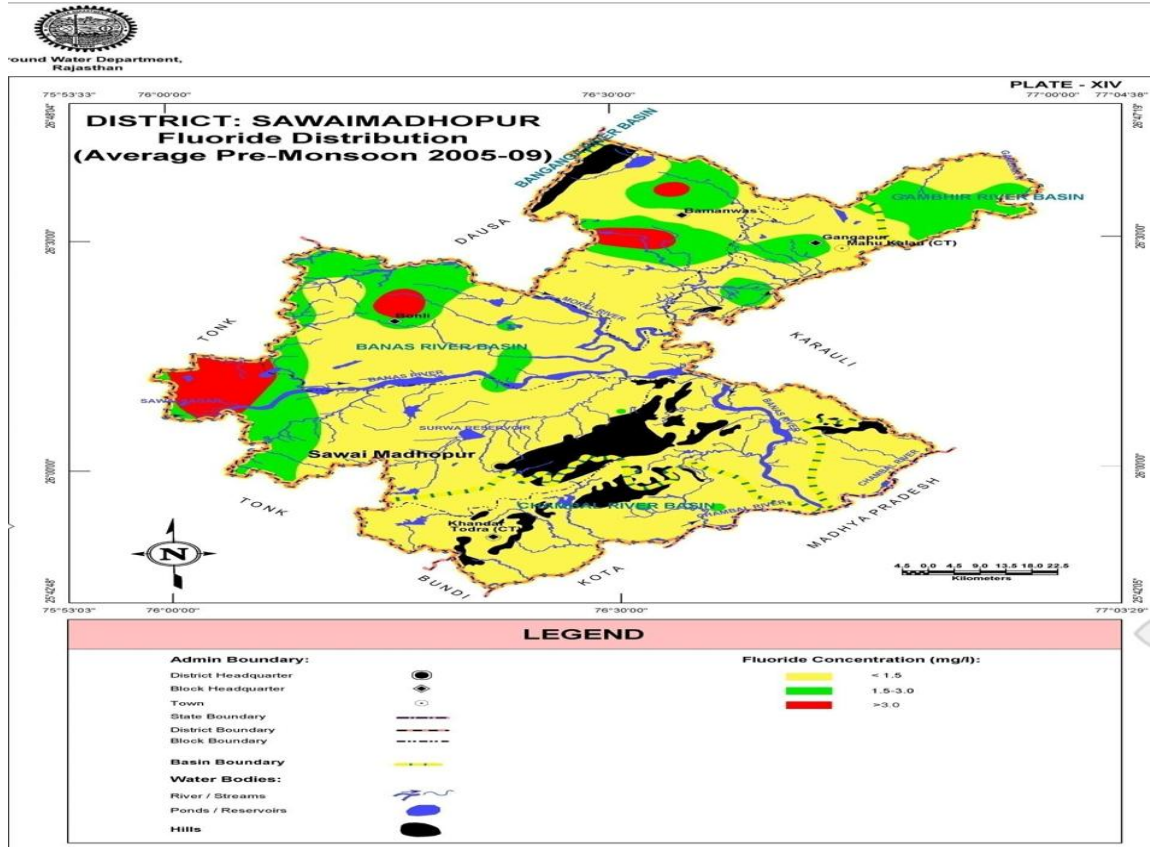
Source: Ground Water Brochure Sawai Madhopur District (2011). Central Ground Water Board, Govt. of India

भूजल में फ्लोराइड का क्षेत्रीय वितरण

फ्लोराइड सकेन्द्रण का मानचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। जिसमें 1.5 ppm से कम सकेन्द्रण वाले भाग को पीले रंग में प्रदर्शित किया है जो जिले का सारणी : फ्लोराइड विवरण (पंचायत समिति के आधार पर)

लगभग 76 प्रतिशत भाग को घेरता है, 1.5 से 3.0ppm वाले भाग को हरे रंग में प्रदर्शित किया है जो लगभग 19 प्रतिशत भाग घेरता है, बाकी बचे हुए 3.00 ppm से अधिक वाले भाग को लाल रंग से प्रदर्शित किया है।

फ्लोराइड सकेन्द्रण (2005-09)	ब्लॉक वाइज क्षेत्रीय वितरण (कि.मी. ²)										
	बामनवास		बोली		गंगापुर		खण्डार		सवाई माधोपुर		कुल क्षेत्र
	क्षेत्र	प्रतिशत	क्षेत्र	प्रतिशत	क्षेत्र	प्रतिशत	क्षेत्र	प्रतिशत	क्षेत्र	प्रतिशत	
<1-5	454.5	64.0	739	70.5	392.6	62.7	1,190.8	99.6	775.8	71.1	3,553.1
1-5&3-0	204.6	28.8	272	26.0	233.3	37.3	5.2	0.4	185.6	17.0	901.2
>3.0	51.1	7.2	37.1	3.5	—	—	—	—	129.7	11.9	217.9
कुल	710.2	100.0	1,049.0	100.0	625.9	100.0	1,196.0	100.0	1,091.1	100.0	4,672.2



Source : Hydrogeological Atlas of Rajasthan. Sawai Madhopur district. Ground Water Department, Rajasthan.

वर्ष 2001 में सवाई माधोपुर जिले में भूजल भंडार 1783 मिलियन घनमीटर थे, लेकिन भूजल के अनियमित दोहन के कारण वर्तमान में यह 1497 मिलियन घनमीटर ही बचा है। यदि वर्तमान गति से भूजल दोहन होता रहा एवं इस दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं किये गये तो उपलब्ध भंडार अगले कुछ वर्षों में समाप्त प्रायः हो जाएंगे। भूजल स्तर भी 1995 में 12-17 मीटर था जो 2010 में 20 मीटर तक गिर गया है। इससे विद्युत खर्च बढ़ गया। नलकुप एवं कुएं सूख गए हैं, एवं सूख रहे हैं।

उसमें गांवों में सिंचाई के साथ साथ पेयजल संकट भी उत्पन्न हो रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि व अन्य प्रकार की जल की आवश्यकताओं में वृद्धि से सवाई माधोपुर जिला अत्यधिक संकट में है। राज्य में प्रति व्यक्ति वार्षिक जल उपलब्धता 780 घनमीटर है जबकि न्यूनतम आवश्यकता 1000 घनमीटर आंकी गयी है।

भूजल अतिदोहन के कारण व दुष्प्रभाव

घटते भूजल संसाधन एवं अतिदोहन के मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या, प्रति व्यक्ति जल खपत में वृद्धि,

वृक्षों की अंधाधुन्ध कटाई, वर्षा में कमी, बढ़ता शहरीकरण एवं औद्योगिकरण, जल प्रबंधन में जल सहभागिता का अभाव, स्वार्थी व जल के प्रति संवेदनहीनता आदि है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र में –

1. भू-जल सतर में भारी गिरावट
2. कुएं, बोरवेल में जलाभाव के कारण सूख जाना, एवं बिजली पर अत्यधिक खर्च,
3. पेयजल संकट उत्पन्न होना
4. सिंचाई व अन्य औद्योगिक गतिविधियों हेतु जलाभाव
5. भूजल के अतिदोहन के कारण गहराई में भूजल खारा होता जा रहा है। कई क्षेत्रों में खारेपन एवं फ्लोराइड की मात्रा बढ़ती जा रही है, जो कि 6 ppm से अधिक है। पेयजल में फ्लोराइड की मात्रा 1.50 से अधिक नहीं होनी चाहिए, इससे अधिक होने पर हड्डी एवं दन्त जनित बीमारियां हो जाती है।

जल प्रबंधन एवं समस्या समाधान के उपाय

1. विश्व में भू-जल प्रबंधन इस तरह से किया जाता है, जिसमें भू-जल का 70 प्रतिशत से अधिक उपयोग में नहीं लिया जाए ताकि भविष्य में जल संरक्षित किया जा सके।
2. वर्षा जल संग्रहण हेतु घरों में टांके, खेतों में छोटे-छोटे कुण्डे (तलाई), तालाब आदि बनाए जाए, एवं कुएं, बावड़िया, झालरे आदि का जीर्णोद्धार कर उपयोग लिए जायें।
3. फव्वारा एवं बूंद बूंद सिंचाई पद्धति अपनाएना, ताकि पानी की 40 से 60 प्रतिशत तक बचत की जा सके।
4. उचित मात्रा में उपयुक्त खाद व कीटनाशकों का उपयोग किया जाए ताकि पानी की शुद्धता बनी रहे।
5. सभी उद्योगों में उपयोग जल की 80 प्रतिशत मात्रा पुनः उपयोग हेतु रिसायकलिंग करना चाहिए। एक कृत्रिम भूजल पुनर्भरण अनिवार्य होना चाहिए।

निष्कर्ष

जल एक बहुमूल्य संसाधन है। यह कही विकास का तो कही विनाश का कारक बनता है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से जल संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है, क्योंकि जल ही जीवन है इसका संरक्षण एवं सही उपयोग किया जाना भारत के भविष्य के सतत विकास हेतु आवश्यक है। जल संकट एक बहुत बड़ी समस्या है जिसके विकल्प के रूप में रेनवाटर हार्वेस्टिंग सार्थक हल प्रस्तुत कर सकता है। सामान्य बरसात का पानी जहाँ गिरता है वहाँ से बहकर दूसरी जगह चला जाता है। पृथ्वी की सतह पर बहने से उसमें तमाम अशुद्धियाँ मिल जाती हैं फिर उसे पीने लायक बनाने के लिये काफी धन और श्रम की आवश्यकता होती है। आर. डब्ल्यू.एच. के सिद्धांतों के अनुसार पानी जहाँ गिरता है वहाँ एकत्र करना चाहिए, इस विषय पर वैश्विक स्तर पर प्रयास चल रहे हैं, कानून बनाए जा रहे हैं, बहुत सी

सरकारी गैर सरकारी संस्थाएं प्रयास कर रही हैं, पर सारे प्रयास सफल तभी हो सकते हैं जब देश के नागरिक जल-संकट की भयावहता को महसूस करें और प्रयासों को सफल बनाने में सहयोग दें और निदान की दिशा में प्रयास करें। साहस के साथ ही जल को मितव्ययिता से खर्च करना चाहिए। टंकियों के ओवरफ्लो के बाद नालियों में पानी बहने के प्रति सजग रहना चाहिए। मकानों की संरचना में आंशिक परिवर्तन करके छतों में बरसाती पानी इकट्ठा करके पाइपों के सहारे एक विशेष सोकपिट में डालना चाहिए। इसमें कपड़े धोने और शौचालयों के पानी को मिलने से बचना चाहिए। यह कहा जा सकता है कि जल व्यक्ति विशेष के लिए आवश्यक है इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का हनन नहीं होना चाहिए, पहाड़ों, जलस्रोतों व वनों को एक सूत्र में बाँधा जाना अति आवश्यक है, जिसके माध्यम से जल संरक्षण संभव है इसके लिए जंगलों, नदियों को बचाना जरूरी है, क्योंकि दोनों के माध्यम से लोगो को पीने का पानी और पर्याप्त शुद्ध वातावरण मिलेगा। भारत के जल संकट को दूर करने के लिये चार चुनौतियाँ हैं। पहला सार्वजनिक सिंचाई-नहरों की सिंचाई क्षमता में इजाफा, कम हो रहे भूमि जल संग्रह को पुनः संग्रहीत करना, प्रति यूनिट पानी में फसलों की उत्पादकता में वृद्धि और भूमिगत जमीन के ऊपर के जलस्रोतों को नष्ट होने से बचाना, तभी जल और भारत को भविष्य सुरक्षित रहेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *District Census Handbook Sawai Madhopur (1991,2001,2011). Census of India.*
2. *Ground Water Brochure Sawai Madhopur District (2011). Central Ground Water Board, Govt. of India.*
3. *Hydrogeological Atlas of Rajasthan. Sawai Madhopur district. Ground Water Department, Rajasthan.*
4. *Ratna Reddy, V (2010). Water Sector Performance Under Scarcity Conditions: A Case Study of Rajasthan, India.*
5. *Central water Board, Ministry of Water Resources, Government of India.*
6. *Ground Water Fluoride Distribution. European Union State Partnership Program. Ground Water Department, Rajasthan.*
7. *Pragati Vivaranika (2015-16). Public Health and Engineering Department, Rajasthan.*
8. *भारत का राष्ट्रीय पोर्टल*
9. *जल संसाधन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार*
10. *ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्रालय, राजस्थान सरकार*
11. *राजस्थान आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय*